HISTORY

B.A.PART-II (Subs)

Paper-II (Mughal period)

Unit-I, (Early life of Akbar)

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series - 55

"अकबर (1556-1605) का प्रारंभिक जीवन"

(Early life of Akbar)

अकबर महान का जन्म 15 अक्टूबर, 1542 को हमीदा बानू बेगम के गर्भ से अमरकोट के राना 'वीरसाल के महल में हुआ। अकबर के जन्म के समय की स्थिति संभवतः हुमायूँ के जीवन की सर्वाधिक कष्ट प्रद स्थिति थी। इस समय उसके पास अपने साथियों को बांटने के लिए एक कस्तूरी के अतिरिक्त कुछ भी न था। अकबर का बचपन मां-बाप के स्नेह से रहित अस्करी के संरक्षण में माहमअन्गा, जौहर समसुद्दीन खान एवं जीजी की देख-रेख में कंधार में बीता।

1551 में मात्र 9 वर्ष की अवस्था में पहली बार अकबर को गजनी की साझेदारी सौंपी गई। हुमायूं ने हिन्दुस्तान की पुनर्विजय के समय 'मुनीम खा को अकबर का संरक्षक नियुक्त किया । सिकन्दर सूर से अकबर

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

द्वारा 'सरहिन्द' को छीन लेने के बाद हुमायूँ ने 1555 में उसे अपना 'युवराज' घोषित किया। दिल्ली पर अधिकार कर लेने के बाद हुमायूं ने अकबर को लाहौर का गवर्नर नियुक्त किया, साथ ही अकबर के संरक्षक मुनीम खाँ को अपने दूसरे लड़के मिर्जा हकीम का अंगरक्षक नियुक्त कर, तुर्क सेनापति 'बैरम खान' को अकबर का संरक्षक नियुक्त किया।

हुमायूँ की मृत्यु के समाचार को सुनकर बैरम खां ने गुरुदास पुर के निकट 'कलानौर में 14 फरवरी 1556 को अकबर का राज्याभिषेक करवा दिया और वह जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर बादशाह गाजी की उपाधि से राजसिंहासन पर बैठा।

बैरम खां-अकबर का संरक्षक बैरम खां कराकुईलू तुर्क था। इसके पूर्वज कुर्दिस्तान के शासक थे। बैरम खां का पिता सैफ अली बेग बाबर की सेना में था । बैरम खां का जन्म बदख्शा एवं शिक्षा बल्ख में सम्पन्न हुई। सोलह वर्ष की आयु में बैरम ने हुमायू की सेना के साथ कत्रीज के युद्ध में हिस्सा लिया । इसने हुमायूं के पुनः भारत विजय के समय का महत्वपूर्ण सहयोग किया ।

बैरम खां एक योग्य, संस्कृति, शिक्षित, वफादार, साहसी, विद्वान, उच्चकोटि का सैनिक एवं सेनापति था । हुमायूँ ने उसके इन्हीं सभी गुणों से खुश होकर अमीर का पद प्रदान किया था, कालान्तर में बैरम खां की विश्वसनीयता बढ़ने के साथ ही उसको संरक्षक, खानखाना, और यारवफादार आदि की उपाधि मिली।

Dr Gudy Kumari (A.N.D College)

अकबर ने सम्राट बनने पर अपने संरक्षक बैरम खां को वकील') (वजीर) नियुक्त कर खान-एखाना) की उपाधि प्रदान की। अकबर की प्रारम्भिक कठिनाइयों के समाधान में बैरम खां का महत्वपूर्ण सहयोग था। बैरम खा 1556 से 1560 तक अकबर का संरक्षक रहा ।

बैरम खा ने अपने संरक्षक काल में तर्दबेग को पाँच हजारी का मनसब देकर दिल्ली का सुबेदार बनाया, साथ ही मुनीम खा के नेतृत्व में काबुल पर मिर्जा सुलेमान के आक्रमण को असफल करवाया।

सम्भवतः अकबर को अपने शासन काल के प्रारम्भिक दिनों में सर्वाधिक परेशानी का सामना सुर शासक आदिल शाह के प्रधानमंत्री हेमू से ही करना पड़ा । हेमू सम्भवतः वैश्य जाति का था और 'रेवाड़ी' के बाजार में नमक बेचा करता था । अफगान शासको की सेना में सर्वप्रथम उसकी नियुक्ति बाजार में तौल करने वाले अधिकारी के रूप में की गयी, पर अपनी योग्यता एवं पराक्रम के कारण वह बाजार से उठकर सम्राट के प्रधानमंत्री पद पर जा पहुँचा । अपने साहस, धैर्य एवं सैन्य संचालन की अपूर्व क्षमता के कारण ही इसने आदिल शाह की ओर से लड़े गये 24 युद्धों में, से 22 को जीतने का श्रेय प्राप्त किया । आदिल शाह ने इसे 'विक्रमादित्य' की उपाधि प्रदान की।

हेमू दिल्ली और आगरा पर से मुगल कब्जे को समाप्त करने के लिए आगरे पर आक्रमण के लिए बढ़ा । उसके आगरा पहुँचने के पूर्व ही हुमायूं की मृत्यु हो गई जिससे हेमू की मंजिल और सरल हो गई । हेमू

Dr Gundy Kumari (A.N.D College)

आगरा और ग्वालियर पर अधिकार करता हुआ '7 अक्टूबर 1556 को तुगलकाबाद में तरगी बेग को परास्त कर दिल्ली पर कब्जा कर लिया। हेमू ने राजा विक्रमादित्य की उपाधि के साथ एक स्वतन्त्र शासक बनने का सौभाग्य प्राप्त किया 'अहमद यादगार' के अनुसार हेमू ने दिल्ली में घुसने पर शाही छत्र धारण किया साथ ही अपने नाम के सिक्के चलयाये । कुछ इतिहासकारों के अनुसार सम्भवतः इसने दिल्ली के तख्त पर अपना राज्याभिषेक भी करवाया था इस तरह से हेमू की साधारण स्थान से उठकर स्वतन्त्र शासक बनने तक की यात्रा निःसन्देह मध्यकालीन भारत की एक रोचक घटना मानी जाती है । मध्यकालीन भारत का हेमू अन्तिम ऐसा हिन्दू व्यक्ति था जिसने अपनी महत्वाकांक्षा की पूर्ति अपनी योग्यता, शक्ति एवं पराक्रम के बलबूते किया। तीन सौ पचास वर्ष के विदेशी शासन को समाप्त कर हेमू ने दिल्ली पर स्वदेशी शासन की स्थापना की, जो बहुत ही अल्पकालीन रहा । हेमू की इस सफलता से चिन्तित अकबर एवं उसके कुछ सहयोगियों के मन में काबुल वापस जाने की बात कोसने लगी परन्तु बैरम खां ने अकबर को इस विषम परिस्थिति का सामना करने के लिये तैयार कर लिया, जिसका परिणाम था पानीपत की द्वितीय लड़ाई।

पानीपत की द्वितीय लड़ाई (5 नवम्बर 1556)

यह संघर्ष पानीपत के मैदान में हेमू के नेतृत्व में अफगान सेना एवं बैरम खां के नेतृत्व में मुगल सेना के मध्य लड़ा गया। युद्ध का

Dr Guddy Kumari IA N D College

प्रारम्भिक क्षण हेमू के पक्ष में जा रहा था परन्तु इसी समय हेमू की आंख में एक तीर लग जाने से उसकी सेना में भगदड़ मच गई अन्ततः उसे पकड़ कर उसकी हत्या कर दी गई । इस तरह से युद्ध का परिणाम मुगलों के पक्ष में रहा । भारत पर अधिकार को लेकर मुगलों एवं अफगानों के बीच संघर्ष का यहीं पर अन्त हो गया । डा० आर०पी० त्रिपाठी ने लिखा कि 'हेमू की पराजय मात्र एक दुर्घटना थी एवं अकबर की विजय एक देवी सहयोग ।'

बैरम खां का पतन-

1556 से लेकर 1560 तक बैरम मुगल साम्राज्य का वास्तविक कर्ता-धर्ता बना रहा, परन्तु 1560 तक अकबर काफी समझदार हो चुका था, वह शासन के समस्त कार्यो में स्वतन्त्र निर्णय लेना चाहता था। अतः बैरम एवं अकबर के मध्य मतभेदो की शुरुआत हुई, जो बैरम खां के पतन का कारण बनी। पतन के महत्वपूर्ण कारणों में अकबर का असन्तोष, 'अतका खैल', का योगदान । यह एक ऐसे वर्ग का सामूहिक नाम था जिसमें अकबर की धाय मां माहमअन्गा, जीजीअन्गा, आजम खां, समसुद्दीन खां, शहाबुद्दीन राजमाता, हमीदा बानो बेगम, मुल्ला मीर मुहम्मद आदि गुप्त रूप से अकबर को बैरम खां के विरुद्ध भड़काना आरम्भ कर दिया।

धार्मिक भेदभाव-

Dr Gundu kumari (A.N.D College)

चूंकि बैरम खां शिया धर्मावलम्बी था इस लिए उस पर यह आरोप लगाये गये कि वह सुत्री सम्प्रदाय के लोगों की उपेक्षा करता है। ईरानी-तूरानी ईर्ष्या-द्वेष की भावना चूंकि वैरम खां ईरानी था इसलिए उस पर आरोप लगा कि वह तूरानी लोगों की उपेक्षा कर ईरानी मुसलमानों को अमीर का पद प्रदान कर रहा है । बैरम खां के नेतृव में किये गये कुछ सैन्य अभियानों की असफलता भी उसके पतन का कारण बनी । इस तरह से बैरम खा के पतन की पृष्ठभूमि तैयार हो जाने के बाद अकबर ने दिल्ली जाकर वहां से बैरम खां को एक पत्र लिखा जिसमें उसने बैरम के समक्ष तीन प्रस्ताव रखा-(1) काल्पी एवं चन्देरी की सुबेदारी, (2) राज्यदरबार में सम्राट के गुप्त मामलों का सलाहकार, (3) मक्का की तीर्थ यात्रा ।

तीनों प्रस्तावों में से बैरम खां मक्का की तीर्थ यात्रा के प्रस्ताव चुनकर तीर्थ यात्रा की ओर चल पड़ा । मार्ग में ही पाटन नामक स्थान पर मुबारक खाँ नामक एक अफगान युवक (इसके पिता की हत्या मच्छीवाड़ा के युद्ध में बैरम खां ने की थी) ने बैरम खां की हत्या कर दी । कालान्तर में मुगल सम्राट अकबर ने बैरम खां की विधवा 'सलीमा बेगम' से निकाह कर उसके 4 वर्षीय पुत्र को पुत्रवत संरक्षण दिया जो आगे चलकर 1584 में खानखाना की उपाधि को ग्रहण किया । पाटन के फकीरों ने बैरम खां के मृत शरीर का अंतिम संस्कार किया।

अकबर के प्रारंभिक सुधार

Dr Guddy Kumari (A N D College)

(1) युद्ध में बन्दी बनाये गये व्यक्तियों के परिवार के सदस्यों को दास बनाये जाने की परम्परा को तोड़ते हुए अकबर ने दास प्रथा पर 1562 पूर्णतः रोक लगा दिया।

(2) मई 1562 में अकबर 'हरम दल' से अपने को पूर्णतः मुक्त कर लिया। इस दल के प्रमुख सदस्य- थे माहम अन्गा, जीजी अन्गा, आधम खां, मुनीम खां, शिहाबुद्दीन अहमद खां थे। जब तक अकबर ने इस दल के प्रभाव में काम किया तब तक के उसके शासन को 'पेटीकोट सरकार' व 'पर्दा शासन' भी कहा जाता है।

(3) अगस्त 1563 में अकबर ने विभिन्न तीर्थ स्थानों पर लगने वाले 'तीर्थ यात्रा कर' की वसूली को बंद करवा दिया । (4) मार्च 1564 में अकबर ने 'जजिया कर' जो, गैर मुस्लिम जनता से व्यक्ति कर' के रूप में वसूला जाता था, को बन्द करवा दिया।

आगे भी जारी है

धन्यवाद

Dr Guddy kumari (A.N.D College)